2

शिक्षावल्ली

शिक्षावल्ली अथवा तैतिरीयोपनिषद् के प्रथम अध्याय में बारह ऋचाएं अर्थात अनुवाक् है, जिनमें ध्यान और नैतिकता के नियम दिये गये हैं जिनका ज्ञान के साधक को अपने मन की पवित्रता के लिए अभ्यास करना चाहिए। इस अध्याय में योग को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। यह कहा गया है कि ज्ञान के साधक को सर्वोच्च सत्ता की तरफ बढ़ने के लिए अपने, मन को सांसारिक जीवन से दूर ले जाने के लिए योग बहुत ही आवश्यक है। शिक्षावल्ली में शिक्षा का वर्णन दिया गया है जिसके अन्तर्गत ध्वनिविज्ञान और उच्चारण आदि का वर्णन है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- सस्वर शिक्षावल्ली का उच्चारण कर पाने में; और
- गुरू और शिष्य के संबंध को जान पाने में ।

2.1 शिक्षावल्ली

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ॐ ।

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वर्यमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥

aum sham no mitrah sham varunah . sham no bhavatvaryama . sham na indro brihaspatih . sham no vishnururukramah . namo brahmane . namaste vayo . tvameva pratyaxam brahmasi . tvameva pratyaxam brahma vadishyami . ritam vadishyami . satyam vadishyami. tanmamavatu . tadvaktaramavatu . avatu mam.h . avatu vaktaram.h . aum shantih shantih shantih .. 1..
iti prathamo.anuvakah ..

श्री गुरूवर को नमस्कार! मित्र तथा वरूण हमारे लिए शान्ति स्वरूप हों। अर्यमा हमारे लिए शान्ति स्वरूप हों। इन्द्र एवं बृहस्पति हमारे लिए शान्ति स्वरूप हों। उरुक्रम विष्णु हमारे लिए शान्ति प्रदाता हों। उस प्ररम ब्रह्म को नमन। हे वायु, आपको नमन। आप, आप ही प्रत्यक्ष "ब्रह्म" हैं तथा प्रत्यक्ष ब्रह्म के रूप में मैं आपका ही कथन करूँगा। मैं सत्याचरण (ऋतम्) का कथन करूँगा! मैं सत्य बोलूंगा! वह मेरी रक्षा करे। वह "वक्ता" की रक्षा करे! हाँ, वह मेरी रक्षा करे। वह "वक्ता" की रक्षा करे।

शान्ति की स्थापना हों।

ॐ शिक्षां व्याख्यास्यामः । वर्णः स्वरः । मात्रा बलम् । साम सन्तानः।

इत्युक्तः शिक्षाध्यायः ॥ १॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥

aum shixam vyakhyasyamah . varnah svarah . matra balam.h . sama santanah . ityuktah shixadhyayah .. 1..
iti dvitiyo.anuvakah ..

हम शिक्षा की (मौलिकतत्त्वों) की व्याख्या करेंगे। "वर्ण" तथा "स्वर", "सुरतारत्व" (मात्रा) तथा "प्रयास" (बल), "समतान" (साम) तथा "सातत्य" (सन्तान) इन छ का शिक्षा के अध्याय में वर्णन किया है।

सह नौ यशः । सह नौ ब्रह्मवर्चसम् । अथातः सꣳहिताया उपनिषदम् व्याँख्यास्यामः । पञ्चस्वधिकरणेषु । अधिलोकमधिज्यौतिषमधिविद्यमधिप्रजं-मध्यात्मम् । ता महासꣳहिता इत्याचक्षते । 1

saha nau yashah . saha nau brahmavarchasam.h athatah sa.nhitaya upanishadam vyakhyasyamah.. panchasvadhikaraneshu.. adhilokam.. adhijyautisham.. adhividyam.. adhiprajamadhyatmam . h . ta mahasa{\m+} hita ityachaxate..1

हम दोनों (आचार्य एवं शिष्य) एक साथ यश प्राप्त करें। एक साथ ब्रह्मतेन (ब्रह्मवर्चस) प्राप्त करें। इसके पश्चात् हम संहिता के गहन गूढ अर्थ की व्याख्या करेंगे जिसके पाँच प्रमुख विषय हैं; अधिलोकम् ("लोकों" से सम्बन्धित) अधिज्योतिषम् ("ज्योतिर्मय अग्नियों" से सम्बन्धित) अधिविद्यम् ("विद्या" से सम्बन्धित) अधिप्रज्ञम् ("सन्तति" (प्रजा) से सम्बन्धित) अध्यात्मम् ("आत्मा" से सम्बन्धित) । इन पांच को "महासंहिता" कहा जाता है।

अथाधिलोकम् । पृथिवी पूर्वरूपम्। द्यौरुत्तररूपम् । आकाशः सन्धिः वायुः सन्धानम् । इत्यधिलोकम् । 2

athadhilokam.h . prithivi purvarupam . h . dyauruttararupam . h . akashah sandhih . vayuh sandhanam . h . ityadhilokam . h . . 2...

प्रथम अधिलोकम् का तात्पर्य है (लोक–विषयक)। पृथ्वी पूर्व रूप है, द्युलोक उत्तर रूप हैं, आकाश सन्धि है; वायु सन्धान है। इतना ही अधिलोकम् हैं।

अथाधिजौतिषम् । अग्निः पूर्वरूपम्। आदित्य उत्तररूपम् । आपः सन्धिः । वैद्युतः सन्धानम्। इत्यधिज्यौतिषम्। 3

athadhijautisham.h . agnih purvarupam.h . aditya uttararupam.h . apah sandhih . vaidyutah sandhanam.h . ityadhijyautisham.h . . 3

इसके बाद अधिज्योतिषम् अर्थात् अग्नि पूर्व–रूप है, सूर्य उत्तर रूप है; जल सन्धि हैं; विद्युत् सन्धान है। इतना ही अधिज्योतिषम् हैं।

अथाधिविद्यम् । आचार्यः पूर्वरूपम् । अन्तेवास्युत्तररूपम् । विद्या सन्धिः । प्रवचनꣳसन्धानम् । इत्यधिविद्यम्। 4

athadhividyam.h .acharyah purvarupam.h... antevasyuttararupam.h .vidya sandhih. pravachana{\m+} sandhanam.h . ityadhividyam.h ...4

इसके बाद अधिविद्यम् अर्थात् आचार्य पूर्व–रूप है; अन्तेवासी (शिष्य) उत्तर–रूप है; विद्या सन्धि है; प्रवचन सन्धान है। इतना ही अधिविद्यम् है।

अथाधि॒प्रजम् । माता पू॑र्व॒रूपम् । पितोत्त॑र॒रूपम् । प्र॑जा सं॒धिः । प्रजननꣳसन्धा॒नम् । इत्यधि॒प्रजम् 5

athadhiprajam.h . mata purvarupam.h .pitottararupam.h . praja sandhih . prajanana{\m+} sandhanam.h .ityadhiprajam.h ...5

इसके पश्चात् अधिप्रज्ञम् अर्थात् माता पूर्व–रूप है; पिता उत्तर–रूप है; प्रजा (सन्तान) सन्धि है; प्रजनन प्रक्रिया सन्धान है। इतना ही अधिप्रज्ञम् है।

अथाध्या॒त्मम् । अध॒राहनुः पू॑र्व॒रूपम् । उत्त॒राहनू॑त्त॒र॒रूपम् । वाक्सं॒धिः । जिह्वा॑सन्धा॒नम् । इत्यध्या॒त्मम् । 6

athadhyatmam.h . adhara hanuh purvarupam.h . uttara hanuruttararupam.h . vaksandhih . jihva sandhanam.h . ityadhyatmam.h ...6

इसके पश्चात् अध्यात्मम् अर्थात् अधर हनु (ऊपरी जबड़ा) पूर्व–रूप है; उत्तर हनु (नीचे का जबड़ा) उत्तर–रूप है; वाक् सन्धि है, जिह्वा सन्धान। इतना ही अध्यात्मम् है।

इतीमा॒हास॒ꣳहिताः । य एवमेता महासꣳहिता व्याख्या॑ता वे॒द । सन्धीयते प्रजया॑ प॒शुभिः । ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन सुवर्ग्येण॑ लो॒के॒न 7

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥

कक्षा – 6

टिप्पणी

itima mahasa{\m+} hitah . ya evameta mahasa{\m+} hita vyakhyata veda . sandhiyate prajaya pashubhih . brahmavarchasenannadyena suvargyena lokena ...7

iti tritiyo.anuvakah ..

ये ही हासहिताएँ है। जो इन सब महासंहिताओं को जानता है और जिस रूप में व्याख्यापित करता है, वह प्रजा (सन्तति) से, पशुधन से, ब्रह्मतेज से, अन्न से, अन्न के भोग–पदार्थों से तथा स्वर्ग में अपनी उच्च अवस्थिति को प्राप्त कर सम्पन्न हो जाता है।

यश्छन्द॑सामृष॒भो वि॒श्वरू॑पः । छन्दो॒भ्योऽध्य॒मृता᳚त्सम्ब॒भूव॑ । स मेन्द्रो॑ मे॒धया᳚ स्पृणोतु । अ॒मृत॑स्य देव॒ धार॑णो भूयासम्। शरीर॑ं मे॒ विच॑र्षणम् । जिह्वा मे॒ मधु॑मत्तमा । कर्णा᳚भ्यां॒ भूरि॒विश्रु॑वम् । ब्रह्म॑णः को॒शो॑ऽसि मे॒धया पि॑हितः । श्रु॒तं मे॑ गोपाय । आ॒वह॑न्ती वितन्वा॒ना ॥ १॥

yashchandasamrishabho vishvarupah . chandobhyo . adhyamritatsambabhuva . sa mendro medhaya sprinotu . amritasya deva dharano bhuyasam.h . shariram me vicharshanam.h . jihva me madhumattama . karnabhyam bhuri vishruvam.h. brahmanah kosho.asi medhaya pihitah . shrutam me gopaya . avahanti vitanvana .. 1..

वैदिक छन्दों (ऋचाओं) का जो ऋषभ है और जिसका यह सम्पूर्ण विश्व दृश्यरूप है, वेदों से ऊपर विद्यमान जो अमृतत्व है, उससे वह

उत्पन्न हुआ है, इन्द्र मेरी पुष्टि के लिए मेधा शक्ति को संवर्धित करें! हे देव मैं अमरता का पात्र बनूँ अर्थात् अमर हो जाऊँ। मेरा शरीर प्रत्येक कार्य के लिए स्फूर्त बने, मेरी जिह्वा मधुर भाषा बोले वर्षण करे। मैं अपने कानों से व्यापक एवं बहुविध विद्या का श्रवण करूँ। हे इन्द्र, आप "ब्रह्म" का कोश हैं तथा आप ही हैं वह आवरण जिसे बुद्धि की क्रियाओं ने "उस" (ब्रह्म) पर डाल दिया है; मैंने जिस पवित्र विद्या का अध्ययन किया है उस सम्पूर्ण विद्या का मेरे लिए संरक्षण कीजिये।

कुर्वाणाऽचीरमात्मनः । वासांऽसि मम गावश्च । अन्नपाने च सर्वदा । ततो मे श्रियमावह । लोमशां पशुभिः सह स्वाहा । आमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा । विमाऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा । प्रमाऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। दमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा । शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा ॥ २॥

kurvana.achiramatmanah . vasa{\m+} si mama gavashcha. annapane cha sarvada . tato me shriyamavaha . lomasham pashubhih saha svaha . a ma yantu brahmacharinah svaha. vi ma.a.ayantu brahmacharinah svaha . pra ma.a.ayantu brahmacharinah svaha . damayantu brahmacharinah svaha. shamayantu brahmacharinah svaha .. 2..

वह मेरे लिए सम्पत्ति लाती है तथा उसको बढाती है, वह मेरे लिए वस्त्रों, गौओं, अत्र तथा पेय पदार्थों की सर्वदा उपलब्धता करती है अतः उसके साथ मेरे लिए अधिक लोमयुक्त सम्पत्ति तथा पशुओं सहित उस "लक्ष्मी" को लाइये। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

ब्रह्मचारीगण मेरे पास आयें। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।।

इधर–उधर जहां कही से भी से ब्रह्मचारीगण मेरे पास आयें। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

ब्रह्मचारीगण मेरी ओर प्रस्थान करें। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

ब्रह्मचारीगण आत्म–प्रभुत्व प्राप्त करें। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ

ब्रह्मचारीगण आत्म–शान्ति प्राप्त करें। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ

यशो॒ जनेऽसानि॒ स्वाहा॑ । श्रेया॒न् वस्यसोऽसानि॒ स्वाहा॑ । तं त्वा॑ भग॒ प्रवि॑शानि॒ स्वाहा॑ । स मा॑ भग॒ प्रवि॑श॒ स्वाहा॑ । तस्मि॑न्॒ स॒हस्र॑शाखे । निभ॑गाऽहं त्वयि॑ मृजे॒ स्वाहा॑ । यथाऽऽप॒ः प्रव॑ताऽऽयन्ति॑ । यथा॒ मासा॑ अहर्ज॒रम् । ए॒वं मां ब्र॑ह्मचा॒रिण॑ः । धात॒रायन्तु स॒र्वत॒ः स्वाहा॑ । प्र॒ति॒वे॒शो॑ऽसि॒ प्रमा॑भाहि॒ प्रमा॑पद्यस्व ॥ ३॥

इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥

yasho jane.asani svaha . shreyan.h vasyaso.asani svaha . tam tva bhaga pravishani svaha . sa ma bhaga pravisha svaha . tasmin tsahasrashakhe nibhagaham tvayi mrije svaha . yatha.a.apah pravata.a.ayanti yatha masa aharjaram.h . evam mam brahmacharinah . dhatarayantu sarvatah svaha . prativesho.asi pra ma bhahi pra ma padyasva .. 3..

मैं जनों में यशस्वी जन होऊँ। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

मैं धनवानों में श्रेष्ठ जन होऊँ। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ

हे प्रभो, जो "आप" हैं मैं "उस" में प्रवेश करूँ। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

हे ज्योतिर्मय, आप भी मेरे अन्दर समाहित हो जाइये। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

हे करुणामय प्रभो, आप सहस्रधाराओं वाली नदी के समान हैं, ऐसे आपके अन्दर मैं अपने को स्वच्छ करके पवित्र हो जाऊँ। मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

जिस प्रकार नदी का जल ऊपर से नीचे की ओर बहता है, जैसे वर्ष के माह दिवस के अवसान की ओर तीव्रगति से जाते हैं, हे प्रभो, उसी प्रकार सभी दिशाओं से ब्रह्मचारीगण मेरी ओर आयें। स्वाहा!मैं आहूतिं भेंट करता हूँ।

हे प्रभो, आप मेरे प्रतिवेशी हैं, आप मेरे बहुत समीप निवास करते हैं। मेरे अन्दर समाहित हो जाइयें, मेरा प्रकाश, मेरा सूर्य बनकर मुझे प्रकाशित करिये।

भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतयः । तासामुहस्मै तां चतुर्थीम् ।
माहाचमस्यः प्रवेदयते । मह इति । तद्ब्रह्म । स आत्मा । अङ्गान्यन्या देवताः।
भूरिति वा अयं लोकः । भुव इत्यन्तरिक्षम् । सुवरित्यसौ लोकः ॥ १॥

bhurbhuvah suvariti va etastisro vyahritayah . tasamu ha smaitam chaturthim.h . mahachamasyah pravedayate .

maha iti . tat.h brahma . sa atma . a~nganyanya devatah . bhuriti va ayam lokah . bhuva ityantarixam.h . suvarityasau lokah .. 1..

"भू" "भुवः" तथा "स्वः" ये तीन "विशेष शब्द" हैं उस प्रभु के नाम के। माहाचमस्य ऋषि ने ही वास्तव में इनके साथ चौथी व्याहति "महः" का ज्ञान कराया। वह "ब्रह्म" है, वह "आत्मा" है तथा अन्य देवगण उसके ही अंगरूप हैं।

"भू" है ह लोक है; "भुवः" अन्तरिक्षः है "स्वः" अन्य लोक है; किन्तु "महः" सूर्य है। सूर्य से ही ये समस्त लोक संवर्धित तथा समृद्धि को प्राप्त करते हैं।

मह इत्यांदित्यः । आदित्येन वाव सर्वेंलोक महीयन्ते । भूरिति वा अग्निः । भुव इतिं वायुः । सुवरित्यांदित्यः । मह इतिं चन्द्रमाः । चन्द्रमंसा वाव सर्वाणि ज्योतीꣳषि महीयन्ते । भूरिति वा ऋचंः । भुव इति सामांनि । सुवरिति यजूंꣳषि ॥ २॥

maha ityadityah . adityena vava sarve loka mahiyante . bhuriti va agnih . bhuva iti vayuh . suvarityadityah . maha iti chandramah . chandramasa vava sarvani jyoti{\m+} shi mahiyante . bhuriti va richah . bhuva iti samani . suvariti yaju{\m+} shi .. 2..

भू: अग्निय है "भुवः" वायु है; "स्वः" सूर्य; किन्तु "महः" चन्द्रमा है।

चन्द्रमा से ही ये ज्योतिर्मय ग्रह–नक्षत्र संवर्धित एवं महिमा को प्राप्त होते हैं।

"भूः" ऋगवेद की ऋचाँ है; "भुवः" सामवेद के मन्त्र है; "स्वः" यजुर्वेद के मन्त्र है।

मह इति ब्रह्म । ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते । भूरिति वै प्राणः । भुव इत्यपानः । सुवरिति व्यानः । मह इत्यन्नम् । अन्नेन वाव सर्वे प्राण महीयन्ते। ता वा एताश्चतस्रश्चतुर्ध । चतस्रश्चतस्रो व्याहृतयः । ता यो वेद। स वेद ब्रह्म। सर्वेऽस्मैदेवा बलिमावहन्ति ॥ ३॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥

maha iti brahma . brahmana vava sarve veda mahiyante . bhuriti vai pranah . bhuva ityapanah . suvariti vyanah . maha ityannam.h . annena vava sarve prana mahiyante . ta va etashchatasrashchaturdha . chatasrashchatasro vyahritayah . ta yo veda . sa veda brahma . sarve.asmai deva balimavahanti .. 3..

किन्तु "महः" है "ब्रह्म"। ब्रह्म से ही ये समस्त वेद संवर्धित तथा समृद्ध (महिमान्वित) होते हैं।

"भूः" प्राण–प्रधान वायु है; "भुवः" अपान–निम्नतर वायु है; "स्वः" व्यान–व्याप्त वायु है; किन्तु "महः" अन्न है। अन्न से ही ये सब वायु संवर्धित तथा समृद्ध होते हैं। ये चार हैं तथा चारो फिर से चार–चार प्रकार से हैं; "उसके" नाम के चार "विशेष शब्द" हैं तथा पुनः प्रत्येक

चतुर्विध हैं। जो इनको जानता है वह "ब्रह्म" को जानता है; तथा उसी के लिए सभी देवगण हवि लाते हैं।

स य एषोऽन्तर्हृदय आकाशः । तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः । अमृतो हिरण्मयः। अन्तरेण तालुके । य एषस्तन इवावलम्बते । सेन्द्रयोनिः । यत्रासौ केशान्तो विवर्तते । व्यपोह्य शीर्षकपाले । भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति। भुव इति वायौ ॥ १॥

sa ya esho.antarahridaya akashah . tasminnayam purusho manomayah . amrito hiranmayah . antarena taluke . ya esha stana ivavalambate . sendrayonih . yatrasau keshanto vivartate . vyapohya shirshakapale . bhurityagnau pratitishthati . bhuva iti vayau .. 1..

देखो, यह जो अन्तर्हृदय में आकाशीय स्वर्ग है, वहाँ यह परम् पुरूष निवास करता है। मनोमय है, देदीप्यमान एवं हिरण्मय है, अमृतस्वरूप है। दोनों तालुओं के बीच यह स्त्री के स्तन तुल्य है वह इन्द्र का उत्पत्ति स्थान है। जहाँ केश अपने अन्तिम सिरे पर भँवर के समान कुन्तलित हो जाता है वही यह शिर के कपाल को विभाजित करके उसके बीच से बाहर आ जाता है ।

सुवरित्यादित्ये । मह इति ब्रह्मणि । आप्नोति स्वाराज्यम् । आप्नोति मनसस्पतिम्। वाक्पतिश्चक्षुष्पतिः । श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः । एतत्ततो भवति । आकाशशरीरं ब्रह्म । सत्यात्मं प्राणारामं मन आनन्दम् । शान्तिसमृद्धममृतम्। इति प्राचीन योग्योपास्व ॥ २॥

इति षष्ठोऽनुवाकः ॥

suvarityaditye . maha iti brahmani . apnoti svarajyam.h . apnoti manasaspatim.h . vak.hpatishchaxushpatih . shrotrapatirvij~nanapatih . etattato bhavati . akashashariram brahma . satyatma pranaramam mana anandam.h . shantisamriddhamamritam.h . iti prachinayogyopassva .. 2..

"सुवः" के रूप में सूर्य में; "महः" के रूप में नित्य "ब्रह्म" में, वह "स्वराज्य" को प्राप्त करता है। वह "मन" के आधिपत्य को प्राप्त करता है; वह "वाक्" का अधिपति है, "चक्षु" का अधिपति है, "श्रोत्र" का अधिपति है, "विज्ञान" का अधिपति है। इसके पश्चात् "ब्रह्म" भी है। उसका शरीर समस्त आकाश है, सत्य उसकी आत्मा है, जिसका "मन" में आनन्द है, जो "प्राण" में अपना सुख प्राप्त करता है, जो "शान्ति–समृद्ध है, "अमृतमय" है। हे प्राचीन योग के तनय, इस रूप में तुम "उसकी" उपासना करो।

पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्दिशोऽवान्तरदिशाः । अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणि। आप ओषधयो वनस्पतय आकाश आत्मा । इत्यधिभूतम् । अथाध्यात्मम्। प्राणो व्यानोऽपान उदानः समानः । चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् त्वक् । चर्ममाꣳस स्नावास्थि मज्जा । एतदधिविधाय ऋषिरवोचत् । पाङ्क्तं वा इदꣳसर्वम् । पाङ्क्तेनैव पाङ्क्तꣳ स्पृणोतीति ॥ १॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥

prithivyantarixam dyaurdisho.avantaradishah . agnirvayuradityashchandrama naxatrani . apa oshadhayo

vanaspataya akasha atma . ityadhibhutam.h . athadhyatmam.h . prano vyano.apana udanah samanah . chaxuh shrotram mano vak.h tvak.h . charma ma{\m+}sa{\m+} snavasthi majja . etadadhividhaya rishiravochat.h . pa~nktam va ida{\m+} sarvam.h . pa~nktenaiva pa~nkta{\m+} sprinotiti .. 1..

पृथ्वि, अन्तरिक्षः द्युलोक, दिशाएँ तथा अवान्तर दिशाएँ, अग्नि, वायु सूर्य, चन्द्रमा तथा विभिन्न नक्षत्र, जल, ओषधियाँ, वनस्पतियाँ, आकाश तथा सर्वान्तरात्मा–ये अधिभूत हैं। अब अध्यात्म शुरू होता है। मुख्य वायु, मध्य वायु, निम्न वायु ऊर्ध्वतर वायु तथा सर्वत्र व्याप्त वायु चक्षु, श्रोत्र, मन, वाक् तथा त्वचाय चर्म, मांस, स्नायुः अस्थि तथा मज्जा रूप है। इस प्रकार इनका विभाजन करके ऋषि कहता है– "यह सम्पूर्ण विश्व पाँच–पाँच के जोड़ों में विभाजित है। "वह परम पुरूष" पाँच और पाँच को पाँच और पाँच से सम्बद्ध करता है।"

ओमिति॒ ब्रह्म॑ । ओमिती॒दꣳसर्वम्॑ । ओमित्ये॒तदनु॑कृतिर्ह॒स्म॒ वा अ॒प्योश्रा॑व॒येत्याश्रा॑वयन्ति । ओमिति॒ सामा॑नि गायन्ति । ॐꣳशोमिति॑ शस्त्राणि॑ शꣳसन्ति । ओमित्यध्व॒र्युः प्रति॑गरं॒ प्रति॑गृणाति । ओमिति॒ ब्रह्मा॒ प्रसौ॑ति । ओमित्य॒ग्निहो॒त्रमनु॑जानाति । ओमिति॒ ब्राह्म॒णः प्र॑व॒क्ष्यन्ना॑ह॒ ब्रह्मोपा॑प्नवा॒नीति॑ । ब्रह्मै॒वोपा॑प्नोति ॥ १॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥

omiti brahma . omitida{\m+} sarvam.h . omityetadanukritirha sma va apyo shravayetyashravayanti

omiti samani gayanti . o{\m+} shomiti shastrani sha{\m+} santi . omityadhvaryuh pratigaram pratigrinati . omiti brahma prasauti . omityagnihotramanujanati . omiti brahmanah pravaxyannaha brahmopapnavaniti. brahmaivopapnoti .. 1..

"ओम्" ही ब्रह्म है, "ओम्" ही यह समस्त विश्व है। "ओम्" ही अनुमोदन सूचक अक्षर है "ओम्" कहकर ही वे कहते हैं, अब हम सुनें तथा वे "ओम्" कहकर ही प्रवचन का आरम्भ करते हैं। "ओम्" से ही सामवेद की ऋचाओं का गान करते हैं; "ओम्" "शोम्" कह कर ही वे शास्त्रों का उच्चार करते है। "ओम्" से यज्ञ का होता (अध्वर्यु) प्रत्युत्तर देता है। "ओम्" से ब्रह्मा सृष्टि का आरम्भ करते हैं (अथवा "ओम्" से मुख्य होता (ब्रह्मा) अनुमति देता है।) "ओम्" से ही अग्निहोत्र की अनुमति दी जाती है। ज्ञान की व्याख्या करने के पूर्व ब्राह्मण "ओम्" का उच्चार करके कहता है– "मैं ब्रह्म को प्राप्त करूँ।" वास्तव में वह "ब्रह्म" को प्राप्त कर लेता है।

ऋतं च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । सत्यं च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । तपश्च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । दमश्च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । शमश्च स्वाध्यायप्रवं॒चने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । मानुषं च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । प्रजा च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवं॒चने च । सत्यमिति सत्यवचां॑ राथी॒ तरः । तप इति तपोनित्यः पौरुशि॒ष्टिः । स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाकों॑ मौद्गल्यः । तद्धि तपं॑स्तद्धि॒ तपः ॥ १॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥

ritam cha svadhyayapravachane cha . satyam cha svadhyayapravachane cha . tapashcha svadhyayapravachane cha . damashcha svadhyayapravachane cha . shamashcha svadhyayapravachane cha . agnayashcha svadhyayapravachane cha . agnihotram cha svadhyayapravachane cha . atithayashcha svadhyayapravachane cha. manusham cha svadhyayapravachane cha . praja cha svadhyayapravachane cha . prajanashcha svadhyayapravachane cha . prajatishcha svadhyayapravachane cha . satyamiti satyavacha rathitarah . tapa iti taponityah paurushishtih . svadhyayapravachane eveti nako maud.hgalyah . taddhi tapastaddhi tapah .. 1..

वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ ऋतम् हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ सत्य हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ तपश्चर्या हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ दम हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ शम हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ पारिवारिक जनों की अग्नियाँ हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ अग्निहोत्र हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ अतिथि–सेवा हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ मनुष्यत्व हो, वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ सन्तति (प्रजा) हो; वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ प्रजनन का कार्य हो, वेद के स्वाध्याय एवं प्रवचन के साथ पुत्रों के पुत्र हों, –ये ही कर्तव्य हैं। "सत्य सर्वप्रथम है" सत्यवादी ऋषि राथीतर (रथीतर के पुत्र) ने ऐसा कहा है। "तप सर्वप्रथम है" नित्य

तपोनिष्ठ ऋषि पौरुशिष्टि (पुरुशिष्ट के पुत्र) ने ऐसा कहा है। "वेदों का स्वाध्याय एवं प्रवचन सर्वप्रथम है" मुद्गल पुत्र नाक ऋषि ने कहा। इसका कारण यह है कि यह सब भी तपस्या है तथा तप है।

अहं वृक्षस्य रेरिवा । कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव । ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि । द्रविणꣳसवर्चसम् । सुमेध अमृतोक्षितः । इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम् ॥ १॥

इति दशमोऽनुवाकः ॥

aham vrixasya reriva . kirtih prishtham gireriva . urdhvapavitro vajiniva svamritamasmi . dravina{\m+} savarchasam.h . sumedha amritoxitah . iti trisha~nkorvedanuvachanam.h .. 1..

"मैं ही "वह" हूँ जो विश्व–वृक्ष को आगे बढाता हूँ। तथा मेरी कीर्ति ऊँचे पर्वत के स्कन्धसदृश है। मैं अमृत के समान उत्कृष्ट एवं पवित्र हूँ, मैं संसार की ज्योतिर्मयी सम्पदा हूँ, मैं गहन विचारक हूँ, आदिकाल से अक्षय अमृत–रूपी हूँ। "यह है त्रिशंकु का वेद–अनुवचन तथा उसके आत्म–ज्ञान की ऋचा।

वेदमनूच्याचार्योन्तेवासिनमनुशास्ति । सत्यं वद । धर्मं चर । स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः । सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम् । कुशलान्न प्रमदितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ॥ १॥

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् । मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । अतिथिदेवो भव । यान्यनवद्यानि कर्माणि । तानि सेवितव्यानि । नो इतराणि । यान्यस्माकꣳसुचरितानि । तानि त्वयोपास्यानि ॥ २॥

नो इतराणि । ये के चास्मच्छ्रेयाꣳसो ब्राह्मणाः । तेषां त्वयाऽऽसनेन प्रश्वसितव्यम् । श्रद्धया देयम् । अश्रद्धयाऽदेयम् । श्रिया देयम् । ह्रिया देयम्। भिया देयम् । संविदा देयम् । अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् ॥ ३॥

ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः । युक्ता आयुक्ताः । अलूक्षा धर्मकामाः स्युः । यथा ते तत्र वर्तेरन् । तथा तत्र वर्तेथाः । अथाभ्याख्यातेषु । ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः । युक्ता आयुक्ताः । अलूक्षा धर्मकामाः स्युः । यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः । एष आदेशः । एष उपदेशः । एषा वेदोपनिषत् । एतदनुशासनम् । एवमुपासितव्यम् । एवमु चैतदुपास्यम् ॥ ४॥

इत्येकादशऽनुवाकः ॥

vedamanuchyacharyontevasinamanushasti . satyam vada. dharmam chara . svadhyayanma pramadah . acharyaya priyam dhanamahritya prajatantum ma vyavachchetsih . satyanna pramaditavyam.h . dharmanna pramaditavyam.h. kushalanna pramaditavyam.h . bhutyai na pramaditavyam.h . svadhyayapravachanabhyam na pramaditavyam.h .. 1..

devapitrikaryabhyam na pramaditavyam.h . matridevo bhava . pitridevo bhava . acharyadevo bhava . atithidevo bhava . yanyanavadyani karmani . tani sevitavyani . no itarani . yanyasmaka{\m+} sucharitani . tani tvayopasyani .. 2..

no itarani . ye ke charumachchreya{\m+}so brahmanah . tesham tvaya.a.asanena prashvasitavyam.h . shraddhaya deyam.h . ashraddhaya.adeyam.h . shriya deyam.h . hriya deyam.h . bhiya deyam.h . sa.nvida deyam.h . atha yadi te karmavichikitsa va vrittavichikitsa va syat.h .. 3..

ra brahmanah sammarshinah . yukta ayuktah . aluxa dharmakamah syuh . yatha te tatra varteran.h . tatha tatra vartethah . athabhyakhyateshu . ye tatra brahmanah sammarshinah . yukta ayuktah . aluxa dharmakamah syuh. yatha te teshu varteran.h . tatha teshu vartethah . esha adeshah . esha upadeshah . esha vedopanishat.h . etadanushasanam.h . evamupasitavyam.h . evamu chaitadupasyam.h .. 4..

वेद का व्याख्यान करने के बाद आचार्य अपने शिष्य को अनुशासन का आदेश देते हैं।

सदैव सत्य बोलो, अपने धर्म के मार्ग पर चलो, वेदों के स्वाध्याय की अवहेलना मत करो। अपने आचार्य को उनका इष्ट धन लाकर देने के बाद तुम अपनी पुत्र परम्परा के दीर्घ सूत्र को नहीं काटोगे। सत्य के विषय में तुम प्रमाद मत करना। अपने कर्तव्य के विषय में तुम कभी

असावधान मत होना। कुशलता के सम्बन्ध में तुम असावधान मत होना। अपनी उन्नति, वृद्धि एवं उद्यम के प्रति कभी असावधान मत होना। वेदों के स्वाध्याय एवं प्रवचन के विषय में कभी भी प्रमाद मत करना।

देवों अथवा पितरों के प्रति अपने कर्तव्यों की अवहेलना कभी मत करना। तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए देवतुल्य हैं तथा तुम्हारे माता देवीतुल्या हैं जिनकी तुम आराधना करते हो। अपने आचार्य की देवसमान सेवा करो तथा घर आये अतिथि की देवसमान सम्मान करना। लोगों के सम्मुख हो कर्म अच्छे हैं तुम केवल उन्हीं कर्मों को पूरे प्रयास से करना, दूसरे कर्मों को नहीं। हमने जिन सत्कर्मों को किया है वे ही तुम्हारे लिये धर्म–समान उपास्य हैं, अन्य कोई कर्म नहीं।

जो भी ब्रह्मचारी (विद्वान) हमसे अधिक श्रेष्ठ तथा महान् है तुम्हें उनको आसन देकर सम्मानित एवं परितृप्त करना चाहिये। तुम्हें श्रद्धा एवं आदरपूर्वक दान कार्य करना चाहिये। तुम सज्जन भाव से दान करोगे, तुम खुशी से दान करोगे। तुम संविदभाव से दान करोगे।

इसके अतिरिक्त यदि तुम्हें अपने कर्म तथा आचरण के विषय में शंका हो तो जो भी ब्राह्मण (विद्वान) वहाँ हों, जो समझदार हों, दूसरों से संचालित न हों, धर्मपरायण हों, कठोर एवं क्रूर न हों, जैसा वे उस विषय में आचरण करे वैसा ही तुम करो। और यदि कोई व्यक्ति दूसरों के द्वारा अभियुक्त तथा अपराधी घोषित हो तो उसके साथ भी तुम उसी प्रकार आचरण करो जैसा उसके प्रति वे सब विद्वान करते हैं। जो सुविचारवान् श्रद्धावान् हैं, दूसरो के द्वारा संचालित नहीं हैं, धर्मपरायण हैं, जो कठोर एवं क्रूर नहीं हैं।

यहीं विधान तथा उपदेश हैं। ये ही परम आदेश हैं। इसी ज्ञान के अनुसार तुम धर्म का पालन करना। हाँ, निश्चित रूप से यही ज्ञान है जो धर्मपूर्वक करने योग्य है।

शं नो॑ मि॒त्रः शं वरु॑णः । शं नो॑ भवत्वर्य॒मा । शं न॒ इन्द्रो॒ बृह॒स्पति॑ः । शं नो॒ विष्णु॑रुरुक्र॒मः । नमो॒ ब्रह्म॑णे । नम॑स्ते वायो । त्वमे॒व प्र॒त्यक्षं॑ ब्रह्मा॑सि। त्वामे॒व प्र॒त्यक्षं॑ ब्रह्मावा॑दिषम् । ऋ॒तमव॑वादिषम् । स॒त्यमव॑वादिषम् । तन्मामा॑वीत् । तद्व॒क्तार॑मावीत् । आवी॒न्माम् । आवी॑द्व॒क्तार॑म् । ॐ शान्ति॒ः शान्ति॒ः शान्ति॑ः ॥ १॥

इति द्वादशोऽनुवाकः ॥

॥ इति शिक्षावल्ली समाप्ता ॥

sham no mitrah sham varunah . sham no bhavatvaryama . sham na indro brihaspatih . sham no vishnururukramah . namo brahmane . namaste vayo . tvameva pratyaxam brahmasi . tvameva pratyaxam brahmavadisham.h . ritamavadisham.h . satyamavadisham.h . tanmamavit.h . tadvaktaramavit.h . avinmam.h . avidvaktaram.h . aum shantih shantih shantih .. 1..

मित्र तथा वरूण हमारे लिए शान्ति स्वरूप हों। अर्यमा हमारे लिए शान्ति स्वरूप हों। इन्द्र एवं बृहस्पति हमारे लिए शान्ति स्वरूप हों। उरुक्रम विष्णु हमारे लिए शान्ति प्रदाता हों। उस प्ररम ब्रह्म को नमन। हे वायु, आपको नमन। आप, आप ही प्रत्यक्ष "ब्रह्म" हैं तथा प्रत्यक्ष ब्रह्म के रूप में मैं आपका ही कथन करूँगा। मैं सत्याचरण (ऋतम्) का

कथन करूँगा! मैं सत्य बोलूंगा! वह मेरी रक्षा करे। वह "वक्ता" की रक्षा करे! हाँ, वह मेरी रक्षा करे। वह "वक्ता" की रक्षा करे।

शान्ति की स्थापना हों।

पाठगत प्रश्न– 2.1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. ..... अधिज्यौतिषमधिविद्यमधिप्रजंमध्यात्मम् ।
2. य एवमेता महासꣳहिता ..... वेद ।
3. ब्रह्मणः कोशोऽसि ..... पिहितः ।
4. ब्रह्मणा वाव ..... महीयन्ते ।
5. अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा ..... ।

आपने क्या सीखा?

- शिक्षावल्ली का उच्चारण
- शिक्षावल्ली का अर्थज्ञान

पाठांत प्रश्न

1. शिक्षावल्ली का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरमाला

2.1

1. अधिलोकम्
2. व्याख्यांता
3. मे॒धया
4. सर्वेंवे॒दा
5. नक्षं॑त्राणि